तंत्र सिद्धि दिवस - 12 अगस्त 2026 - हरियाली अमावस्या

सूर्य ग्रहण (रात्रि 9 बजे से रात्रि 1 बजे)

क्या किसी ने आपकी शक्ति को बांध रखा है?

क्या आप हर समय निर्बल अनुभव करते हैं?

क्या आपकी प्रगति के मार्ग अवरुद्ध हो रहे हैं?

सम्पन्न करें

तंत्र उत्कीलन त्रिपुरा साधना

अस्तित्व पर जब भी संकट आता है, उसका निराकरण तंत्र के द्वारा ही संभव है, क्योंकि तंत्र एक नपा-तुला, जांचा-परखा मार्ग है, जिसके द्वारा बाधाओं पर विजय प्राप्ति सम्भव है।

तन्यते विस्तार्यते ज्ञानम्, अनेन इत तंत्रम्।

तंत्र ज्ञान का विस्तार है और तंत्र तो ज्ञान पूर्वक आचरण करने वाले की रक्षा ही करता है।

हमारे जीवन में जो घटित हो रहा है वह सामान्य है अथवा असामान्य? सामान्य समस्याओं का हल तो सामान्य प्रयोगों से किया जा सकता है। किन्तु असामान्य समस्याओं का हल तो विशेष तंत्र प्रयोगों से ही संभव है और इस हेतु उच्चस्तरीय तंत्र साधनाएं सम्पन्न करनी होती हैं। इस हेतु गुरुदेव के मार्ग दर्शन में श्रेष्ठ उपाय है - **'तंत्र उत्कीलन त्रिपुरा साधना'।**

तंत्र सिद्ध मुहूर्त में तंत्र तीव्र साधनाओं को सम्पन्न करने से शीघ्र सफलता प्राप्त होती है। गुप्त नवरात्रि तंत्र साधनाओं को सम्पन्न करने का साधनात्मक मुहूर्त है। इसके अतिरिक्त इस साधना को किसी भी तंत्र सिद्धि मुहूर्त अथवा अमावस्या को सम्पन्न किया जा सकता है।

तंत्र उत्कीलन त्रिपुरा साधना रात्रिकालीन साधना है, जिसे रात्रि को 10 बजे के पश्चात् सम्पन्न करें। इस साधना हेतु आवश्यक है - **तांत्रोक्त उत्कीलन यंत्र, 11 तांत्रोक्त फल** और **भैरवी माला** आवश्यक है।

मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त **तांत्रोक्त उत्कीलन यंत्र** विशेष रौद्र शिव एवं त्रिपुरा शक्ति के मंत्रों से प्राण प्रतिष्ठित किया गया है। इस यंत्र के सामने जब साधक मंत्र जप करता है तो कैसा ही कीलन प्रयोग हुआ हो वह स्वतः ही समाप्त हो जाता है।

अपने सामने एक बाजोट पर लाल कपड़ा बिछा दें तथा उस लाल कपड़े पर कुंकुम से रंगे चावल और अष्टगन्ध फैला दें, उस पर एक पंक्ति में **तिल तथा सरसों** बराबर मात्रा में मिलाकर उनकी **11 ढेरियां** बनाएं तथा प्रत्येक ढेरी पर एक-एक **'तांत्रोक्त फल'** रख दें, अब इनके सामने ही **'तांत्रोक्त उत्कीलन यंत्र'** को दूध से धोकर एक ताम्र पात्र में स्थापित कर दें। यंत्र और तांत्रोक्त फल का पंचोपचार पूजन करें। सर्वप्रथम विनियोग करें -

विनियोग -

ॐ अस्य श्री सर्वयंत्रमंत्राणां उत्कीलनमंत्र स्तोत्रस्य मूल प्रकृतिर्ऋषिर्जगतीच्छन्दः, निरंजनी देवता क्लीं बीजं ह्रीं शक्तिः, ह्रः लौं कीलकं सप्तकोटि मन्त्र यन्त्र तन्त्र कीलकानां संजीवन सिद्धर्थे जपे विनियोगः।

विनियोग के पश्चात् त्रिपुर भैरवी का ध्यान निम्न मंत्र का जप करते हुए करें -

उद्यद्भानु सहस्र कांति मरुणा क्षौमां शिरोमालिकाम्। रक्तालिप्त पयोधरां जपपटीं विद्यामभीतिं वरम्। हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्र विलसद् वक्त्रार विन्द श्रियम्। देवी बद्ध हिमांशु रत्न मुकुटां वन्दे - रमन्दस्तिाम्।

भगवती त्रिपुर भैरवी की देह कान्ति उदीयमान सहस्र सूर्यों की कांति के समान है। वे रक्त वर्ण के रेशमी वस्त्र धारण किए हुए हैं। उनके गले में मुण्ड माला तथा दोनों स्तन रक्त से लिप्त हैं। वे अपने हाथों में जप-माला, पुस्तक, अभय मुद्रा तथा वर मुद्रा धारण किए हुए हैं। उनके ललाट पर चन्द्रमा की कला शोभायमान है। रक्त कमल जैसी शोभा वाले उनके तीन नेत्र हैं। आपके मस्तक पर रत्न जटित मुकुट है तथा मुख पर मन्द मुस्कान है। भगवती त्रिपुर भैरवी के इस आपको मेरा प्रणाम स्वीकार हो।

अपने दाहिने हाथ से तांत्रोक्त उत्कीलन यंत्र को स्पर्श करते हुए निम्न मंत्रों का उच्चारण करें -

ॐ मण्डूकाय नमः *ॐ कालाग्निरुद्राय नमः*
ॐ मूलप्रकृत्यै नमः *ॐ आधारशक्त्यै नमः*
ॐ कूर्माय नमः *ॐ अनन्ताय नमः*
ॐ वाराहाय नमः *ॐ पृथिव्यै नमः*
ॐ सुधाम्बुधये नमः *ॐ सर्वसागराय नमः*
ॐ मणिद्विषाय नमः *ॐ चिन्तामणि गृहाय नमः*
ॐ श्मशानाय नमः *ॐ पारिजाताय नमः*
ॐ रत्न वेदिकायै नमः *ॐ मणिपीठाय नमः*
ॐ नानामुनिभ्यो नमः *ॐ शिवेभ्यो नमः*
ॐ शिवमुण्डेभ्यो नमः
ॐ बहुमांसास्थिमोदमान शिवोभ्यो नमः
ॐ धर्माय नमः *ॐ ज्ञानाय नमः*
ॐ वैराज्ञाय नमः *ॐ ऐश्वर्याय नमः*
ॐ अधर्माय नमः *ॐ अज्ञानाय नमः*
ॐ अवराज्ञानाय नमः *ॐ अनैश्वर्याय नमः*
ॐ आनन्दकन्दाय नमः *ॐ सर्वतत्वात्मपद्माय नमः*
ॐ प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः *ॐ विकारमयकेसरेभ्यो नमः*
ॐ पंचाशद्वर्णढ़यकर्णिकायै नमः
ॐ अर्कमण्डलाय नमः *ॐ सोममण्डलाय नमः*
ॐ महीमण्डलाय नमः *ॐ सत्वाय नमः*
ॐ रजसे नमः *ॐ तमसे नमः*
ॐ आत्मने नमः *ॐ अन्तरात्मने नमः*
ॐ परमात्मने नमः *ॐ ज्ञानात्मने नमः*
ॐ क्रियायै नमः *ॐ आनन्दायै नमः*
ॐ ऐं पारयै नमः *ॐ परापरायै नमः*
ॐ निस्धानाय नमः *ॐ महारुद्र भैरवाय नमः।।*

मंत्र उच्चारण के पश्चात् मानसिक रूप से भगवान सदाशिव का ध्यान करें तथा भगवान सदाशिव से तंत्र बाधाओं से मुक्त कराने का निवेदन करें।

शिव के ध्यान के पश्चात् साधक **'त्रिपुर भैरवी माला'** से निम्न **भैरवी तंत्र उत्कीलन मंत्र** की एक माला जप करें।

मंत्र

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं षट् पंचाक्षराणाम उत्कीलय उत्कीलय स्वाहा। ॐ जूं सर्वमन्त्र यन्त्र तन्त्राणां संजीवनं कुरु कुरु स्वाहा।।

भैरवी उत्कीलन मंत्र पश्चात् साधक निम्न त्रिपुर भैरवी मंत्र की 3 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

।।ह्सैं ह्सकरीं ह्सैं।।

मंत्र जप की पूर्णता पर शक्ति स्वरूपा त्रिपुरा से तंत्र बाधाओं की समाप्ति की प्रार्थना करें तथा समस्त साधना सामग्री को लाल कपड़े में बांधकर जल में विसर्जित कर दें।

अन्य किसी मुहूर्त पर साधना प्रारम्भ करने पर सात दिन तक नित्य साधना सम्पन्न करने के पश्चात् आठवें दिन समस्त साधना सामग्री को किसी निर्जन स्थान पर जमीन में गाड़ दें। यह विशेष तांत्रोक्त प्रयोग प्राण प्रतिष्ठित साधना सामग्री पर ही सम्पन्न किया जा सकता है।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/-